AHW
15/5/21

काकी पाठ का सारांश अपने भाषा में गृहकर्म कॉपी में लिखिए।

उ→ श्यामू जब सो के उठा तब उसने देखा घर के सारे लोग काकी को घेरकर रो रहें थे। काकी की सरीर कपड़े से ढकी थी। जब उन्हे ले जा रहे थे तब श्यामू ने कहा "कहाँ ले जा रहे हो काकी को। वो से रही है।" किसी तराह श्यामू को सम्हाल लिया गया और कहा गया "काकी अपने माँ के यहाँ गई है।" पर उसको पता चल गया की वे राम के यहाँ गई है। उसने आसमान में पतंग उड़ती देखी और उसके काका विश्वेश्वर से पतंग की माँग की। श्यामू पतंग उड़ाने को बेताब था इसलिए उसने विश्वेश्वर के कोट से एक चवन्नी लाकर उसके घर की दासी का बेटा भोला को दे दिया और कहा "तुम यह बात किसी को मत बोलना, मुझे एक पतंग और डोर ला दो, मैं इसे राम के यहा भेजकर काकी को नीचे ले आऊँगा।" भोला ने कहा "तरकीब तो अच्छी है मगर मोटी रस्सी हो तो ठीक रहेगा।" श्यामू ने फिर कोट से पैसे निकालकर भोला को दिया और कहा "दो अच्छी रस्सीयाँ ले आओ।" जब वे पतंग उड़ाने की तैयारी कर रहे थे तो विश्वेश्वर आए और बोले "तुमने मेरे कोट से पैसे चुराए।" भोला डर के मारे सब कह दिया। विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे मारकर बोले "चोरी करके जेल जाओगा" औ पतंग फाड़ दी।

फिर उन्हें सब बात पता चल गई। उन्होंने
पतंग उठाई और उसमें लिखा था काकी।